Impact Factor (QJIF): 8.47 E-ISSN: 2583-1615, P-ISSN: 3049-3498

International Journal of Research in Academic World

Received: 07/December/2025 IJRAW: 2026; 5(1):146-151 Accepted: 20/January/2026

अंतर्राष्ट्रीय संबंध और मीडिया: भारत के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन

*[1]ऋतंबरा नैनवाल

*[1]सहायक प्राध्यापक, लोक प्रशासन विभाग, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी, नैनीताल, उत्तराखण्ड, भारत।

सारांश

वैश्विक संचार के युग में वैश्विक राजनीति की बदलती और जटिल होती संरचना में मीडिया की भूमिका केवल सूचना के संप्रेषण तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि यह राष्ट्रों की विदेश नीति, कूटनीतिक रणनीतियों, राजनीतिक नैरेटिव तथा जनमत निर्माण का एक सशक्त और निर्णायक उपकरण बन चुका है। वैश्वीकरण, डिजिटल तकनीक और सोशल मीडिया के विस्तार ने अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति को गहराई से प्रभावित किया है, जहाँ अब मीडिया राज्य और जनता के बीच एक सक्रिय मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है।

भारत जैसी बहुलवादी, लोकतांत्रिक और उभरती वैश्विक शक्ति में मीडिया की भूमिका विशेष महत्व रखती है। भारतीय मीडिया न केवल अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की व्याख्या करता है, बल्कि उन्हें घरेलू राजनीति, चुनावी विमर्श और राष्ट्रीय हितों के संदर्भ में प्रस्तुत कर जनधारणाओं को आकार देता है। इस प्रक्रिया में मीडिया विदेश नीति को वैधता प्रदान करने, राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े मुद्दों को उभारने तथा भारत की वैश्विक छवि के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देता है। यह लेख अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और भारत की राजनीति में मीडिया की भूमिका का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। इसमें डिजिटल कूटनीति, सोशल मीडिया के माध्यम से सार्वजनिक कूटनीति, सूचना युद्ध और दुष्प्रचार, सॉफ्ट पावर की अवधारणा, चुनावी राजनीति में विदेश नीति के मुद्दों की प्रस्तुति तथा प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं—जैसे सीमा विवाद, वैश्विक सम्मेलनों और अंतर्राष्ट्रीय संघर्षों—के मीडिया फ्रेमिंग का विस्तार से विश्लेषण किया गया है।

यह शोध पत्र प्रस्तुत करता है कि मीडिया आज न केवल अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि कई मामलों में उन्हें दिशा भी प्रदान करता है। अतः भारत की राजनीति और विदेश नीति को समझने के लिए मीडिया की भूमिका का आलोचनात्मक और संतुलित विश्लेषण अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द: वैश्विक राजनीति, बहुलवादी, लोकतांत्रिक, राजनीतिक नैरेटिव, मीडिया फ्रेमिंग, चुनावी विमर्श।

प्रस्तावना

आज की दुनिया आपस में जुड़ी हुई है। एक देश में होने वाली घटना कुछ ही समय में पूरे विश्व की राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज को प्रभावित कर देती है। इस आपसी जुड़ाव को समझने का विषय अंतर्राष्ट्रीय संबंध कहलाता है, जिसमें देशों के बीच सहयोग, टकराव, कूटनीति, सुरक्षा, व्यापार और सांस्कृतिक संबंधों का अध्ययन किया जाता है। इसी बदलती वैश्विक व्यवस्था में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है। पहले मीडिया को केवल समाचार देने वाला माध्यम माना जाता था, लेकिन आज यह जनमत बनाने, राजनीतिक सोच को प्रभावित करने और सरकारों की नीतियों पर दबाव डालने की क्षमता रखता है। टेलीविज़न, समाचार पत्र, डिजिटल प्लेटफॉर्म और सोशल मीडिया के माध्यम से लोग अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को समझते हैं और उन पर अपनी राय बनाते हैं।भारत जैसी लोकतांत्रिक और बहुलवादी व्यवस्था में मीडिया की भूमिका और भी अधिक बढ़ जाती है। भारत की विदेश नीति, राष्ट्रीय सुरक्षा और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों से जुड़े मुद्दे अब केवल नीति-निर्माताओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आम जनता के बीच चर्चा का विषय बन गए हैं। चीन और पाकिस्तान से संबंध, वैश्विक सम्मेलनों में भारत की भूमिका, युद्ध और शांति के प्रश्न, तथा प्रवासी भारतीयों से जुड़े मुद्दे—इन सभी पर मीडिया सक्रिय रूप से जानकारी और दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। डिजिटल और सोशल मीडिया के आने से यह प्रभाव और तेज हो गया है। अब सरकारें, राजनेता और दूतावास सीधे जनता से संवाद कर सकते हैं। इसे डिजिटल कूटनीति कहा जाता है। साथ ही, गलत सूचना और दुष्प्रचार जैसी समस्याएँ भी सामने आई हैं, जो अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और भारत की राजनीति को प्रभावित करती हैं। इस संदर्भ में यह शोध लेख यह समझाने का प्रयास करता है कि मीडिया किस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को प्रस्तुत करता है, भारत की राजनीति और विदेश नीति पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है, तथा वह जनमत और राजनीतिक विमर्श को कैसे दिशा देता है। सरल शब्दों में कहा जाए तो यह अध्ययन मीडिया और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बीच मौजूद उस गहरे संबंध को उजागर करता है, जो आज भारत की राजनीति को एक वृहद आकार दे रहा है।

मीडिया और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य:

भारत एक ऐसा देश है जिसके अंतरराष्ट्रीय संबंध विश्व में 'तटस्थता' की परिभाषा को रेखांकित करते हैं। भारत के संदर्भ में अंतर्राष्ट्रीय संबंध (International Relations) उन सभी द्विपक्षीय और बहुपक्षीय प्रक्रियाओं, रणनीतियों और अंतःक्रियाओं का

*Corresponding Author: ऋतंबरा नैनवाल

अध्ययन है, जिनके माध्यम से भारत अपने राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा, आर्थिक विकास, वैश्विक स्थिति की पूर्ति के लिए अन्य देशों, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और गैर-राज्य कर्ताओं के साथ जुड़ता है, जिसमें कूटनीति, व्यापार, सहयोग, संघर्ष और शक्ति संतुलन जैसे तत्व शामिल होते हैं। ये संबंध भारत की विदेश नीति के आधार पर होते हैं और संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सुरक्षा व वैश्विक व्यवस्था से प्रभावित होते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को समझने में मीडिया की भूमिका को स्पष्ट करने के लिए कुछ प्रमुख सैद्धांतिक अवधारणाएँ उपयोगी मानी जाती हैं, जैसे कुछ इस प्रकार हैं - एजेंडा-सेटिंग, फ्रेमिंग, सॉफ्ट पावर तथा डिजिटल कूटनीति प्रमुख हैं। ये सिद्धांत यह समझने में सहायता करते हैं कि मीडिया किस प्रकार अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं को चुनकर प्रस्तुत करता है, उन्हें विशेष दृष्टिकोण देता है और इस प्रक्रिया के माध्यम से जनमत का निर्माण करता है। परिणामस्वरूप, मीडिया भारत की राजनीति तथा विदेश नीति की दिशा और प्राथमिकताओं को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1. एजेंडा-सेटिंग

एजेंडा-सेटिंग सिद्धांत यह बताता है कि मीडिया जनता को यह नहीं बताता कि उसे क्या सोचना है, बल्कि यह तय करता है कि जनता किन मुद्दों पर सोचे। जब मीडिया किसी अंतर्राष्ट्रीय विषय को बार-बार और प्रमुखता से प्रस्तुत करता है, तो वही विषय राष्ट्रीय बहस और राजनीतिक प्राथमिकताओं का हिस्सा बन जाता है।

भारत के संदर्भ में देखा जाए तो पाकिस्तान, चीन, आतंकवाद, सीमा विवाद, G20 शिखर सम्मेलन, जलवायु परिवर्तन, प्रवासी भारतीयों तथा वैश्विक दक्षिण (Global South) जैसे विषय मीडिया कवरेज के कारण ही व्यापक जनचर्चा में आए। मीडिया ने इन मुद्दों को न केवल समाचार के रूप में प्रस्तुत किया, बल्कि उन्हें राष्ट्रीय हित, सुरक्षा और भारत की वैश्विक भूमिका से जोड़कर दिखाया। परिणामस्वरूप, इन विषयों पर सरकार की नीतियों को लेकर जनता में अपेक्षाएँ और दबाव दोनों बने।

उदाहरण के लिए—

- सर्जिकल स्ट्राइक (2016) को मीडिया ने राष्ट्र की सैन्य शक्ति, निर्णायक नेतृत्व और राष्ट्रीय गौरव के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया।
- गलवान घाटी संघर्ष (2020) को चीन की आक्रामक नीति और भारत की सुरक्षा चुनौती के रूप में फ्रेम किया गया।

इस प्रकार, मीडिया की फ्रेमिंग ने इन घटनाओं को केवल सैन्य या कूटनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं रहने दिया, बल्कि उन्हें राजनीतिक और भावनात्मक मुद्दों में बदल दिया

2. सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति

सॉफ्ट पावर की अवधारणा यह बताती है कि कोई देश अपनी संस्कृति, मूल्यों, विचारधारा और जीवन-शैली के माध्यम से दूसरों को आकर्षित कर सकता है। इस प्रक्रिया में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

भारतीय संदर्भ में मीडिया ने—

- योग और आयुर्वेद को स्वास्थ्य और जीवन-शैली के वैश्विक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया,
- बॉलीवुड को भारतीय संस्कृति और सामाजिक विविधता का प्रतीक बनाया,
- ISRO की अंतरिक्ष उपलब्धियों को वैज्ञानिक क्षमता और आत्मनिर्भरता के उदाहरण के रूप में दिखाया,
- तथा भारतीय लोकतंत्र को विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में प्रचारित किया,
- मजबूत अर्थ व्यवस्था - विश्व की चौथी अर्थ व्यवस्था के रूप में देश को विश्व पटल पर प्रचारित व प्रसारित किया।

इन सभी पहलुओं ने भारत की सकारात्मक अंतर्राष्ट्रीय छवि को मजबूत किया है। मीडिया के माध्यम से भारत ने अपनी सांस्कृतिक और वैचारिक पहचान को वैश्विक मंच पर स्थापित किया, जिससे उसकी सॉफ्ट पावर में निरंतर वृद्धि हुई।

3. डिजिटल कूटनीति

डिजिटल युग में मीडिया का सबसे प्रभावशाली रूप डिजिटल और सोशल मीडिया के रूप में सामने आया है। आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे Twitter, यूट्यूब और इंस्टाग्राम ने सरकारों और आम जनता के बीच संवाद को प्रत्यक्ष, तेज़ और व्यापक बना दिया है।

भारत में Ministry of External Affairs (MEA), भारतीय प्रधानमंत्री और विदेशों में स्थित भारतीय दूतावास सोशल मीडिया का सक्रिय उपयोग करते हैं। इनके माध्यम से—

- विदेश नीति की जानकारी सीधे जनता तक पहुँचाई जाती है,
- अंतर्राष्ट्रीय संकटों पर त्वरित प्रतिक्रिया दी जाती है,
- और भारत की नीतियों का पक्ष वैश्विक जनता के सामने रखा जाता है।

इसे ही डिजिटल कूटनीति कहा जाता है। इसने पारंपरिक कूटनीति की सीमाओं को तोड़ते हुए भारत को वैश्विक संवाद में अधिक प्रभावी और सुलभ बनाया है। हालांकि, इसके साथ ही गलत सूचना, दुष्प्रचार और सूचना-युद्ध जैसी चुनौतियाँ भी उत्पन्न हुई हैं, जिनसे निपटना आधुनिक अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की एक बड़ी चुनौती बन चुका है।

भारतीय राजनीति और मीडिया

भारत में राजनीति और मीडिया का संबंध बहुत गहरा है। मीडिया न केवल राजनीतिक घटनाओं की जानकारी देता है, बल्कि वह जनता की सोच, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं को भी प्रभावित करता है। विशेष रूप से विदेश नीति और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के मामले में मीडिया की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि आम जनता सीधे इन नीतियों में भाग नहीं लेती, बल्कि मीडिया के माध्यम से ही उन्हें समझती है।

1. विदेश नीति और जनमत का संबंध -

भारत की विदेश नीति कई बार सीधे जनता की राय से प्रभावित होती है, और यह जनमत मुख्य रूप से मीडिया द्वारा निर्मित होता है। जब कोई अंतर्राष्ट्रीय घटना घटती है, तो मीडिया उसे जिस तरह से प्रस्तुत करता है, उसी के आधार पर जनता अपनी राय बनाती है।

उदाहरण के लिए,

26/11 मुंबई आतंकी हमले के बाद भारतीय मीडिया ने लगातार पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद को उजागर किया। इसके परिणामस्वरूप देशभर में पाकिस्तान के प्रति गहरा आक्रोश देखने को मिला और सरकार पर कड़ा रुख अपनाने का दबाव बढ़ा।

इसी प्रकार, गलवान घाटी की घटना (2020) के बाद मीडिया कवरेज के कारण चीन के प्रति नकारात्मक जनभावना बनी। 'बॉयकॉट चाइना' जैसे अभियान जनता के बीच लोकप्रिय हुए, जिसने भारत–चीन संबंधों पर घरेलू दबाव को और मजबूत किया।

रूस–यूक्रेन युद्ध के दौरान भी मीडिया में व्यापक चर्चा हुई कि भारत को किस पक्ष का समर्थन करना चाहिए। मीडिया बहसों और विश्लेषणों के कारण भारत की तटस्थ विदेश नीति को बड़ी संख्या में जनता का समर्थन मिला, क्योंकि इसे राष्ट्रीय हित और ऊर्जा सुरक्षा

से जोड़कर समझाया गया।

इस प्रकार मीडिया विदेश नीति को जनता से जोड़ने का कार्य करता है और सरकार के निर्णयों को जनस्वीकृति दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

2. चुनावी राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे -

वर्तमान समय में विदेश नीति केवल कूटनीतिक विषय नहीं रही, बल्कि यह चुनावी राजनीति का भी महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। मीडिया ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों को चुनावी बहस का केंद्र बना दिया है।2019 के लोकसभा चुनाव में राष्ट्रीय सुरक्षा, आतंकवाद और सीमा सुरक्षा जैसे मुद्दे मीडिया में प्रमुख रूप से छाए रहे। इन विषयों ने चुनावी माहौल को प्रभावित किया और मतदाताओं की प्राथमिकताओं को आकार दिया।2024 के चुनावों में मीडिया ने भारत की बढ़ती वैश्विक भूमिका, अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में सक्रियता और भारत को एक उभरती वैश्विक शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया। 'भारत की वैश्विक नेतृत्व क्षमता' जैसे शब्द और विचार मीडिया विमर्श का हिस्सा बने, जिससे विदेश नीति चुनावी प्रचार का एक महत्वपूर्ण तत्व बन गई।

इससे स्पष्ट होता है कि मीडिया अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों को चुनावी राजनीति से जोड़कर मतदाताओं की सोच और राजनीतिक व्यवहार को प्रभावित करता है।

3. संसद और राजनीतिक बहसों में मीडिया का प्रभाव-

मीडिया संसद और राजनीति के बीच एक सेतु की तरह कार्य करता है। संसद में उठाए गए अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे—जैसे सीमा विवाद, विदेश नीति की विफलता या सफलता, और अंतर्राष्ट्रीय समझौते—जब मीडिया में व्यापक रूप से दिखाए जाते हैं, तो वे राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बन जाते हैं।मीडिया कवरेज के कारण—

- संसद में पूछे गए प्रश्न जनता तक पहुँचते हैं,
- सरकार पर जवाबदेही का दबाव बनता है,
- और विपक्ष को सरकार की विदेश नीति की आलोचना का मंच मिलता है। इस प्रकार मीडिया संसद की बहसों को केवल संसदीय कार्यवाही तक सीमित नहीं रहने देता, बल्कि उन्हें सार्वजनिक चर्चा और राजनीतिक दबाव का विषय बना देता है

अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की मीडिया प्रस्तुति: भारत का अनुभव

आज के समय में अंतर्राष्ट्रीय घटनाएँ केवल सरकारों और राजनयिकों तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि मीडिया के माध्यम से सीधे आम जनता तक पहुँचती हैं। मीडिया इन घटनाओं को जिस तरह से दिखाता और समझाता है, उसी के आधार पर जनता की सोच, भावनाएँ और राजनीतिक प्रतिक्रिया बनती है। भारत के अनुभव में यह बात कई महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं के दौरान स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

1. सर्जिकल स्ट्राइक (2016)

2016 में हुई सर्जिकल स्ट्राइक को भारतीय मीडिया ने एक बड़ी राष्ट्रीय घटना के रूप में प्रस्तुत किया। समाचार चैनलों, अख़बारों और डिजिटल मीडिया में इसे भारत की सैन्य शक्ति, साहस और निर्णायक नेतृत्व के प्रतीक के रूप में दिखाया गया।

4 NEWS

Mail Tod

India gets first crack special operations unit

By Abhishek Bhalla in New Delhi

INDIA is boosting its firepower for more frequent surgical strikes like tactical operations and secret missions with setting up of the first-of-its-kind special operations division, comprising elite commandos from all three services —Army, Navy and the Air Force.

Sources told India Today TV that a Major General rank officer from Army's Special Forces, the Para Commandos, has been appointed to head this division which will soon start functioning.

"Recruitment for tri-service special operations division is underway and soon it will have a substantial number," said an official.

The Special Forces or the commando wings of each force work separately but the idea is to have a common pool that can train and carry out sensitive missions

> Recruitment for Tri-Service special operations division is underway and it will soon gain the strength of numbers
> — AN OFFICIAL

within and outside the country, while maintaining secrecy.

Carrying out operations across the borders, and specific anti-terror missions targeting terror infrastructure will be the focus of this tri-service special force.

"Sometimes, these kinds of operations require skills that need to be synergised from all three wings of the armed forces," sources said.

"A special division specifically meant for these high-value operations will be better prepared in executing these operations to get better results," said an official. It will also be able to launch missions at a short notice. The Para Commandos of the Army, marine commandos popularly known as Marcos of the Navy and Garud commandos of the Air Force will be part of this special operations division.

The division will work under the Integrated Defence Staff (IDS) responsible for synergising the functioning of the three forces and headed by a Lt General rank officer. "The concept is that all three services can come together whenever required but for that, it's important that they train and live together. To begin with, the headquarters have to be raised comprising personnel from all three services. Once that's done, people can begin to be posted," said Lt Gen Satish Dua (Retd) who headed the IDS till last year when the planning was underway.

Sources said, "To begin with, it will have 150-200 personnel but the numbers will be gradually increased and the plan is to have a 2,000-strong commando tri-service division. The numbers from the Army will be more than the other two services."

It was the Naresh Chandra Committee, formed in 2012, that recommended the setting up of three special commands — Cyber, Space, and Special Operations to meet new challenges regarding national security.

FILE PHOTO FOR REPRESENTATION

IN A LEAGUE OF ITS OWN

- Sources told India Today TV that a Major General rank officer from Army's Special Forces, the Para Commandos, has been appointed to head this division which will soon start functioning.
- The Special Forces or the commando wings of each force work separately but the idea is to have a common pool that can train and carry out sensitive missions.
- Carrying out operations across the borders, and specific anti-terror missions targeting terror infrastructure will be the focus of this tri-service special force.
- The division will work under the Integrated Defence Staff (IDS) responsible for synergising the functioning of the three forces and headed by a Lt General rank officer.

मीडिया कवरेज के कारण यह घटना केवल एक सैन्य कार्रवाई न रहकर राष्ट्रीय गौरव और आत्मविश्वास का विषय बन गई। जनता के बीच यह भावना बनी कि भारत अब अपनी सुरक्षा के मामलों में सख्त और सक्षम निर्णय लेने में समर्थ है। इस प्रस्तुति ने भारत की विदेश और सुरक्षा नीति को घरेलू स्तर पर व्यापक समर्थन दिलाया।

2. गलवान घाटी संघर्ष (2020)

गलवान घाटी में भारत–चीन सैनिकों के बीच हुई हिंसक झड़प को भारतीय मीडिया ने चीन की आक्रामक नीति के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया। समाचार रिपोर्टों और चर्चाओं में इसे भारत की संप्रभुता और सीमा सुरक्षा से जोड़कर दिखाया गया।

इस मीडिया कवरेज का प्रभाव यह हुआ कि देशभर में चीन के प्रति नकारात्मक भावना उत्पन्न हुई। 'बॉयकॉट चाइना' जैसे अभियान को जनता का समर्थन मिला और सरकार पर चीन के प्रति सख्त रुख अपनाने का घरेलू दबाव बढ़ा। इस प्रकार मीडिया ने एक अंतर्राष्ट्रीय घटना को सीधे जनता की भावनाओं और राजनीतिक विमर्श से जोड़ दिया।

3. G20 शिखर सम्मेलन (2023)

भारत द्वारा G20 शिखर सम्मेलन की मेजबानी को मीडिया ने एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में प्रस्तुत किया। इसे "न्यू इंडिया के वैश्विक उदय" और "भारत की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय नेतृत्व क्षमता" के प्रतीक के रूप में दिखाया गया।

मीडिया रिपोर्टिंग ने यह संदेश दिया कि भारत अब केवल एक विकासशील देश नहीं, बल्कि वैश्विक निर्णय-निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने वाला देश बन चुका है। इससे जनता में राष्ट्रीय गर्व की भावना बढ़ी और भारत की विदेश नीति को सकारात्मक घरेलू समर्थन मिला।

4. रूस–यूक्रेन युद्ध (2022)

रूस–यूक्रेन युद्ध के दौरान भारतीय मीडिया में लगातार यह बहस चलती रही कि भारत को किस पक्ष का समर्थन करना चाहिए। कुछ चर्चाओं में नैतिक पक्ष पर ज़ोर दिया गया, तो कुछ में राष्ट्रीय हित, ऊर्जा सुरक्षा और सामरिक स्वायत्तता को प्राथमिकता दी गई। इन मीडिया बहसों के कारण आम जनता के बीच यह समझ बनी कि भारत की तटस्थ नीति केवल नैतिक दुविधा नहीं, बल्कि रणनीतिक आवश्यकता भी है। इस तरह मीडिया ने विदेश नीति के जटिल निर्णयों को सरल भाषा में जनता के सामने रखा।

सोशल मीडिया और सूचना-युद्ध
डिजिटल युग में सोशल मीडिया अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का एक नया और शक्तिशाली माध्यम बन गया है। अब सूचना केवल एक दिशा में नहीं जाती, बल्कि जनता भी सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया देती है।

i). **ट्विटर कूटनीति:** भारतीय प्रधानमंत्री और भारतीय दूतावास सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म, विशेष रूप से ट्विटर/X, का सक्रिय उपयोग करते हैं। इसके माध्यम से विदेश नीति से जुड़े संदेश सीधे जनता और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय तक पहुँचते हैं।
इससे कूटनीति अधिक तेज़, पारदर्शी और जनोन्मुखी बन गई है। किसी संकट की स्थिति में तुरंत प्रतिक्रिया देना संभव हो गया है।

ii). **दुष्प्रचार और साइबर प्रोपेगेंडा:** सोशल मीडिया के साथ एक बड़ी समस्या दुष्प्रचार और फेक न्यूज़ की भी सामने आई है। कश्मीर, CAA, LAC विवाद जैसे मुद्दों पर कई बार गलत या भ्रामक सूचनाएँ फैलाई गईं।
इनका उद्देश्य भारत की अंतर्राष्ट्रीय छवि को नुकसान पहुँचाना या आंतरिक अस्थिरता पैदा करना होता है। इससे भारत की विदेश नीति के सामने नई चुनौतियाँ उत्पन्न हुई है

iii). **डिजिटल जनता:** मोबाइल फोन, सोशल मीडिया और ऑनलाइन पत्रकारिता ने युवा पीढ़ी को अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों से जोड़ दिया है। अब जनमत केवल अख़बार और टीवी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि डिजिटल मंचों पर भी सक्रिय रूप से बनता है।

भारत की विदेश नीति पर मीडिया के सकारात्मक प्रभाव
मीडिया ने भारत की विदेश नीति को कई सकारात्मक दिशाओं में प्रभावित किया है, जैसे—

- कूटनीति में पारदर्शिता बढ़ी है
- जनता की भागीदारी और राजनीतिक जागरूकता बढ़ी है
- राष्ट्रीय सुरक्षा के मुद्दों पर संवेदनशीलता आई है
- आर्थिक कूटनीति (FDI, व्यापार, स्टार्टअप) में रुचि बढ़ी है
- सांस्कृतिक कूटनीति को नया विस्तार मिला है

चुनौतियाँ और सीमाएँ
हालाँकि मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके साथ कुछ समस्याएँ भी जुड़ी हैं—

- राजनीतिक पक्षपात के कारण रिपोर्टिंग प्रभावित हो सकती है
- फेक न्यूज़ विदेश नीति को भ्रमित कर सकती है
- सनसनीखेज पत्रकारिता वास्तविक मुद्दों को विकृत रूप में दिखा सकती है
- कॉर्पोरेट और राजनीतिक दबाव निष्पक्षता को प्रभावित करते हैं
- विदेशी मीडिया में भारत की छवि कई बार अधूरी या पक्षपातपूर्ण दिखाई जाती है

निष्कर्ष
इस शोध-पत्र में स्पष्ट रूप से यह दिख रहा है कि समकालीन भारत की राजनीति में मीडिया और अंतर्राष्ट्रीय संबंध एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए और परस्पर निर्भर हो चुके हैं। आज मीडिया केवल अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं की सूचना देने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह इन घटनाओं की व्याख्या करता है, उनके महत्व को निर्धारित करता है और यह तय करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि जनता और राजनीतिक नेतृत्व उन्हें किस दृष्टि से देखें। इस प्रकार मीडिया भारत की विदेश नीति, सांस्कृतिक महत्व, बढ़ते आर्थिक स्तर, राष्ट्रीय सुरक्षा विमर्श और वैश्विक छवि के निर्माण में एक सक्रिय भूमिका निभा रहा है।
इस शोध अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि एजेंडा-सेटिंग और फ्रेमिंग जैसी प्रक्रियाओं के माध्यम से मीडिया यह तय करता है कि कौन-से अंतर्राष्ट्रीय मुद्दे राष्ट्रीय विमर्श का केंद्र बनेंगे। पाकिस्तान, चीन, आतंकवाद, सीमा विवाद, G20, जलवायु परिवर्तन और वैश्विक दक्षिण जैसे विषय मीडिया कवरेज के कारण ही व्यापक सार्वजनिक चर्चा में आए। सर्जिकल स्ट्राइक, गलवान घाटी संघर्ष और रूस–यूक्रेन युद्ध जैसे उदाहरण दर्शाते हैं कि मीडिया की प्रस्तुति ने इन घटनाओं को केवल कूटनीतिक या सैन्य मुद्दे नहीं रहने दिया, बल्कि उन्हें घरेलू राजनीति, जनभावनाओं और चुनावी विमर्श से जोड़ दिया।
शोध में यह भी स्पष्ट रूप से दिख रहा है कि मीडिया भारत की सॉफ्ट पावर और सांस्कृतिक कूटनीति को सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। योग, आयुर्वेद, बॉलीवुड, ISRO और भारतीय लोकतंत्र की सकारात्मक छवि को वैश्विक स्तर पर प्रस्तुत कर मीडिया ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय पहचान को मजबूत किया है। इसके साथ-साथ डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया के विस्तार ने डिजिटल कूटनीति को नई दिशा दी है, जहाँ सरकार, दूतावास और राजनीतिक नेतृत्व सीधे जनता और वैश्विक समुदाय से संवाद करने लगे हैं।
समग्र रूप में यह शोध निष्कर्ष निकालता है कि मीडिया भारत की राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के बीच एक सेतु की तरह कार्य करता है। यह जनमत को आकार देता है, विदेश नीति को वैधता प्रदान करता है और सरकार तथा संसद पर जवाबदेही का दबाव बनाता है। ऐसे में भारत के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि मीडिया संतुलित, तथ्यपरक, जिम्मेदार और संवेदनशील रिपोर्टिंग करे, ताकि विदेश नीति अल्पकालिक भावनाओं के बजाय दीर्घकालिक राष्ट्रीय हितों, वैश्विक स्थिरता की ओर बढ़े और भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व लोकतांत्रिक मूल्यों के अनुरूप आगे बढ़ सके।

संदर्भ

1. Nye JS. *Soft power: The means to success in world politics*. New York: Public Affairs; 2004.
2. Thussu DK. *International communication: Continuity and change*. London: Bloomsbury Academic; 2018.
3. Malone DM. *Does the elephant dance? Contemporary Indian foreign policy*. Oxford: Oxford University Press; 2011.
4. Mohan CR. *Crossing the Rubicon: The shaping of India's new foreign policy*. New Delhi: Penguin; 2003.
5. McCombs M, Shaw D. The agenda-setting function of mass media. *Public Opinion Quarterly*. 1972;36(2):176–187.
6. Entman RM. Framing: Toward clarification of a fractured paradigm. *Journal of Communication*. 1993;43(4):51–58.
7. Ministry of External Affairs. *Annual Reports*. Government of India; Various Years.
8. शर्मा प. वैश्वीकरण और भारतीय मीडिया की भूमिका: अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर प्रभाव. *अंतर्राष्ट्रीय अध्ययन पत्रिका*. 2024;15(2):45-60.
9. Verma S. India's Neighbourhood Policy and Media Narratives. *Journal of South Asian Politics*. 2021;8(1):112-130.
10. Aaj Tak. Surgical strike anniversary uri attack Indian army commandos pok. 2018 Sep 28. Available from: https://www.aajtak.in/india/story/surgical-strike-anniversary-uri-attack-indian-army-commandos-pok-566771-2018-09-28
11. India News. Russia Ukraine CeaseFire: रुक गया रूस यूक्रेन युद्ध! पुतिन ने पीएम मोदी को दिया धन्यवाद | Trump. YouTube. 2025 Mar 15. Available from: https://www.youtube.com/watch?v=Sj9CV3Sza9s
12. Twitter. Image post. 2019. Available from: https://pbs.twimg.com/media/D6lGKcjV4AAmBMG.jpg